पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली

खण्ड–XXIX अंक–12 30 जून, 2024

उद्भवस्थिति संहार कारिणीं, क्लेश हारिणीम्। सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं राम वल्लभाम्।।

उत्पत्ति, स्थिति (पालन) और संहार करने वाली, क्लेशों की हरने वाली तथा सम्पूर्ण कल्याणों की करने वाली श्रीरामचन्द्र जी की प्रियतमा श्रीसीताजी को मैं नमस्कार करता हूँ। **–श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड/5**

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2024/284998 दिनांक 11.06.2024 के अनुसार **प्रो. अभिषेक सरकार** ने 29.04.2024 से संस्थान के पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में सहायक प्रोफेसर (ग्रेड-I) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/2024/286343 दिनांक 14.06.2024 के अनुसार **श्री मनीष भारद्वाज** ने 05.06.2024 से संस्थान स्वास्थ्य एकक में सातवें वेतन आयोग के लेवल–10 में सहायक कुलसचिव के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग–II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/2024/287814 दिनांक 19.06.2024 के अनुसार **श्री सुमित दयाल** ने 22.05.2024 से संस्थान के छात्र कार्य अनुभाग में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–6 में सहायक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
- स्थापना अनुभाग– II से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/Estt.-2/2024/287427 दिनांक 18.06.2024 के अनुसार **श्री रविन्दर पाल** ने 03.06.2024 से संस्थान में सातवें वेतन आयोग के वेतन लेवल–5 में प्रशासनिक सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

कार्यालय आदेश

स्थापना अनुभाग–2 से प्राप्त कार्यालय आदेश सं. IITD/Estt.-2/2024/286450 दिनांक 14.06.2024 के अनुसार संस्थान हित में तत्काल प्रभाव से निम्नलिखित ग्रुप 'ए' अधिकारियों का स्थानान्तरण किया गया है :–

क्र.सं	अधिकारी का नाम, पद	अनुभाग से	अनुभाग में
1.	श्री कल्याण कुमार भट्टाचार्जी संयुक्त कुलसचिव	समन्वय, योजना एकक, स्वास्थ्य एकक, प्रेषण एवं पावती, ट्रेवल डेस्क, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी	समन्वय, योजना एकक, प्रेषण एवं पावती, ट्रेवल डेस्क, प्रथम अपीलीय प्राधिकारी
2.	श्री मनीष भारद्वाज सहायक कुलसचिव	पोस्टिंग पूल	स्वास्थ्य एकक एव सोनीपत परिसर

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय/स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 30 जून, 2024 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. मंजू मोहन, प्रोफेसर
वायुण्मडलीय विज्ञान केन्द्र

मंजू मोहन ने 27 अगस्त, 1984 को संस्थान में वरिष्ठ अनुसंधान सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। अप्रैल, 2000 में आपको सह प्रोफेसर तथा जनवरी, 2005 में आपको प्रोफेसर के पद पर नियुक्त किया गया।

आपकी विशेषज्ञता के क्षेत्रों में वायुमण्डलीय सीमा परत मॉडलिंग; वायु गुणवत्ता माप तथा रासायनिक परिवहन मॉडलिंग; हीट आइलैण्ड माप, मॉडलिंग तथा शमन अध्ययन; माप तथा मॉडलिंग से कोहरे के जीवन चक्र को समझना; शहरी जलवायु; रासायनिक एवं पेट्रोकैमिकल उद्योगों से अत्यन्त खतरनाक रसायनों के आकस्मिक उत्सर्जन के लिए जोखिम मूल्यांकन तकनीक शामिल हैं।

1986 में आई.आई.टी. दिल्ली से अपनी पीएच.डी. की उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् आपने वर्ष 1987 में एटमॉस्फेरिक टर्बुलेन्स डिफ्यूजन लेबोरेट्री (NOAA), ओक रिज यू.एस.ए. में तथा 1988 के दौरान रॉयल नीदरलैण्ड्स मेट्रोलॉजिकल इंस्टिट्यूट, दि नीदरलैण्ड में पोस्ट डॉक्टरल फेलो के रूप में भी काम किया।

आपने 1993 में मेट्रोलॉजिकल रिसर्च यूनिट कार्डिंगटन (यू.के. मेट ऑफिस) में; 1994 में नेशॅनल इंस्टिटयूट फॉर

रिर्सोसिस ऐन्ड एन्वायरमेंन्ट, त्सुकुबा तथा 1996 में लोवा यूनिवर्सिटी में विजिटिंग साइंस्टिस्ट के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। आपने मैक्स प्लैंक इंस्टिटयूट, मेंज (जर्मनी) हंस्टबिले यूनिवर्सिटी तथा NCSU, रैले (यू.एस. ए.); मीसेई यूनिवर्सिटी, टोक्यो; आर.एम. आई.टी. यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया सहित कई अन्य संस्थानो में आमंत्रित व्याख्यान दिए।

आप नेशॅनल एकेडमी ऑफ साइंसेज इण्डिया (NASI) और नेशॅनल एनवायरनमेंटल साइंस एकेडमी (NESA) की फेलो रही हैं। आपने अपने शोध छात्रों के साथ सर्वश्रेष्ठ पेपर/प्रस्तुतीकरण के लिए कई पुरस्कार/पदक प्राप्त किए हैं। जिनमें पर्यावरण विज्ञान (इंस्टिटयूट ऑफ इंजीनियर्स, इण्डिया) में नवाब जैन यार जंग बहादुर स्मृति पदक; जापान पुरस्कार (2015 तथा 2018) तथा कई अन्य पुरस्कार शामिल हैं। आप 2016 से 2020 तक वायुमण्डलीय विज्ञान केन्द्र की अध्यक्ष भी रही तथा आपने संस्थान में सह संकायाध्याक्ष (छात्र मामलें), वार्डन, कैलाश छात्रावास (2003-2010); हेड ऑफ दि हाउस (हाउस मास्टर), कैलाश छात्रावास में (2012 से अब तक) अपनी सेवाएं प्रदान की हैं।

आप इसरो–GBP (PMC); जल संसाधन मंत्रालय (जलवायु परिवर्तन पर भारतीय राष्ट्रीय समिति); भारतीय सांख्यिकी संस्थान, कोलकाता; SFRB (NPDF, SRG) विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (WoS-A) पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MOEFCC) (उद्योग-II) में विशेषज्ञ सदस्य रही हैं। इसके अलावा आप आई.आई.टी. संस्थानों, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों, MoEFCC, MoES, CPCB आदि की विशेष समितियों तथा चयन समितियों में भी शामिल रही हैं। आपने पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, इसरो, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, AERB, CSIR, राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, ग्रसिम उद्योग, RMS1, NSF (यू.एस.ए.), MEXT (जापान), ब्रिटिश कांउसिल, PM12 (यू.के.) वर्ल्ड बैंक/ADB आदि जैसी कई प्रमुख राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय निकायों से 33 वित्त पोषित प्रायोजित अनुसंधान/ परामर्श परियोजनाओं को संचालित किया है। आपके पर्यवेक्षण में 15 छात्रों ने पीएच.डी. पूर्ण की हैं तथा 4 छात्र अभी भी अध्ययन कर रहे हैं। आपने 35 एम.टेक. तथा कई बी.टेक./एम.टेक. परियोजनाओं तथा ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षणों का भी पर्यवेक्षण किया।

आपने 19 शोध पत्र तथा कई बुक चैप्टर प्रकाशित किए हैं। आपने लगभग 200 शोध प्रस्तुतियाँ/आमंत्रित वार्ताएं भी की हैं।

आपने कई प्रमुख अन्तरराष्ट्रीय गतिविधियों में योगदान दिया है इनमें वायु प्रदूषण के नियंत्रण एवं रोकथाम पर male' घोषणापत्र तथा दक्षिण एशिया (UNEP, SACEP) के लिए इसके संभावित सीमापार प्रभाव, वायुप्रदूषण के गोलार्ध परिवहन पर टॉस्क फोर्स (TF HTAP) जिसे US, EPA तथा EV द्वारा प्रायोजित किया गया है तथा एशियाई वायुमण्डलीय–महासागरीय प्रक्रियाओं पर ANCST (एशियाई नेटवर्क ऑन क्लाइटमेट साइंस ऐन्ड टेक्नोलॉजी) विशेष विषय समूह शामिल हैं।

मृदु स्वभाव की प्रो. मंजू मोहन अपने संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय रही हैं।

श्री मुकेश चन्द (26376), उप कुलसचिव, छात्र कार्य अनुभाग

श्री मुकेश चन्द ने 28 अप्रैल, 1995 को संस्थान में सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 01 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ अधीक्षक के रूप में मैप तथा 01 मई, 2007 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 13 मार्च, 2014 में आपको सहायक कुलसचिव के पद पर नियुक्त किया गया। 14 मार्च, 2019 में आपको आर. ऐन्ड पी.आर.एस. के अन्तर्गत उन्नयन दिया गया तथा 31 मार्च, 2023 में आपको सीमित विभागीय परीक्षा (LDE) के अन्तर्गत उप कुलसचिव के रूप में पदोन्नत किया गया। आपने आई.आर.डी., छात्र कार्य अनुभाग, स्थापना अनुभाग–I आदि अनुभागों में अपनी सेवाएं प्रदान की। सौम्य स्वभाव के श्री मुकेश चन्द एक मेहनती एवं कर्मठ उप कुलसचिव रहे हैं।

श्री मोहन किशोर कौशिक (26654), उप तकनीकी अधिकारी, भारती दूरसंचार प्रौद्योगिकी एवं प्रबन्धन स्कूल

श्री मोहन किशोर कौशिक ने 20 जनवरी, 2004 को तकनीकी सहायक के रूप में संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया था। 19 सितम्बर, 2007 में आपको आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में पुनर्पदनामित किया गया। 20 फरवरी, 2014 को आर.सी.पी. एस. के अन्तर्गत आपको 4600 रु. ग्रेड वेतन में उन्नयन दिया गया। 22 दिसम्बर, 2022 में आर. ऐन्ड पी.आर. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ तकनीकी अधिकारी के रूप में पुनर्पदनामित किया गया तथा 21 फरवरी, 2023 को डी.पी.सी. के अन्तर्गत आपको उप तकनीकी अधिकारी के रूप में पदोन्नत किया गया। विनम्र स्वभाव के श्री मोहन किशोर कौशिक एक मेहनती एवं कर्मठ उप तकनीकी अधिकारी रहे हैं।

श्रीमती मंजू लव (27115), प्रशासनिक सहायक, प्रबन्ध अध्ययन विभाग

श्रीमती मंजू लव ने 12 नवम्बर, 1991 को संस्थान में ग्रुप 'डी' पुस्तकालय अटेन्डेन्ट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 दिसम्बर, 2001 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको ग्रेड वेतन 1900/–रु. एवं इसी योजना के अन्तर्गत 12 नवम्बर, 2011 को ग्रेड वेतन 2000/–रु. में उन्नयन दिया गया। 4 अप्रैल, 2016 में आपको कनिष्ठ सहायक के रूप में ग्रेड 'डी' से 'सी' में नियोजित किया गया तथा 22 दिसम्बर, 2022 में आपको एम.ए.सी. पी.एस. के अन्तर्गत लेवल–5 में उन्नयन दिया गया। सौम्य स्वभाव की श्रीमती मंजू लव एक ईमानदार एवं कर्तव्यपरायण प्रशासनिक सहायक रही हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय/स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके व उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

आई.आई.टी. दिल्ली में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस समारोह–2024

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली द्वारा अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस 2024 के अवसर पर संस्थान में 20 जून, 2024 से 21 जून, 2024 तक लगातार कार्यक्रम आयोजित किए गए। संस्थान द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों, शिक्षकों, कर्मचारियों, निवासियों एवं उनके परिवारों सहित आई.आई.टी. दिल्ली समुदाय के बीच योग के अभ्यास एवं महत्व को बढावा देना है। समारोह के दौरान कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

20 जून, 2024 को ''राजयोग ध्यान'' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें प्रजापति ब्रह्मकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय (PBKIVV) द्वारा ''मेडिटेशॅन फॉर हेल्दी ऐन्ड हैप्पी लाइफ'' पर एक व्याख्यान शामिल था। जिसमें लगभग 150-180 प्रतिभागियों ने भाग लिया। व्याख्यान का उद्देश्य प्रतिभागियों को ''राजयोग ध्यान'' की प्राचीन उत्पत्ति एवं गहन लक्ष्यों के बारे में शिक्षित करना था। राजयोग में अपनी विशेषज्ञता साझा करने के लिए PBKIVV के तीन प्रतिष्ठित प्रशिक्षकों **बी.के. पीयूष, बी.के. गिरिजा** एवं **बी. के. अंकुश** को आमंत्रित किया गया। इस कार्यक्रम के ठीक बाद संस्थान के हॉकी मैदान में बच्चों के लिए विशेष योग सत्र आयोजित किया गया, जिसमें संकाय एवं स्टाफ के लगभग 150-160 बच्चों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में योग मुद्राओं की जानकारी प्रदान करना था ताकि वे अपने दैनिक जीवन में इसे अपना सकें। प्रतिभागियों के साथ योग में अपनी विशेषज्ञा साझा करने के लिए **श्री प्रितिश मौर्या, सुश्री भावना** एवं **सुश्री वैशाली** को आमंत्रित किया गया।

21 जून, 2024 को अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संस्थान के हॉकी मैदान में योग दौड़ (Yoga Run) का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 400-500 विद्यार्थियों, संकाय, स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। दौड़ का उद्देश्य प्रतिभागियों के बीच शारीरिक फिटनेस को बढ़ावा देना था। सुबह की दौड़ के बाद, हॉकी मैदान में **योग और ध्यान** सत्र आयोजित किया गया जिसमें योग प्रशिक्षक के रूप में भारतीय सेना के तीन कार्मिकों– **श्री कुलदीप सिंह, श्री शिवाजी के. एस.** एवं **श्री प्रदीप** को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के सेमिनार हॉल में चिन्मय मिशन के अखिल भारतीय चिन्मय युवा केन्द्र (उत्तर क्षेत्र) के निदेशक स्वामी **चिद्रुपानन्द** द्वारा ''कर्मयोग'' पर व्याख्यान दिया गया। लगभग 150 प्रतिभागियों ने भागीदारी की तथा उन्होंने अपने कर्म एवं जीवन में ''कर्मयोग'' के महत्व पर जानकारी प्राप्त की।

अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर संस्थान के केन्द्रीय पुस्तकालय द्वारा 19 से 21 जून, 2024 के दौरान योग पर विषयगत पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

सभी कार्यक्रमों में संस्थान के विद्यार्थियों, संकाय, स्टाफ सदस्यों एवं परिसर समुदाय की सक्रिय भागीदारी रही। आमंत्रित विशेषज्ञों और कलाकारों ने उत्सव को बहुत महत्व दिया, अपनी विशेषज्ञता साझा की और सभी के लिए एक यादगार अनुभव बनाया।

त्यागपत्र स्वीकृत

स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IES1/2024/285274 दिनांक 12.06.2024 के अनुसार **डॉ. कृष्णु गांगुली,** पोस्ट डॉक्टरल फेलो (यांत्रिक इंजीनियरी विभाग) ने अपने पद से त्यागपत्र का अनुरोध किया था। जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 02.06.2024 से स्वीकार कर लिया है। अतः डॉ. कृष्णु गांगुली को 02.06.2024 से संस्थान कार्य से मुक्त कर दिया गया हैं।

आजादी के दीवानों को अध्यात्म-संस्कृति से मिलती थी उर्जा

विनीत त्रिपाठी

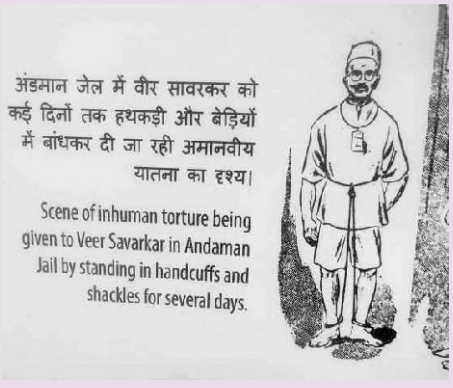

प्रदर्शनी में अंडमान के पोर्ट ब्लेयर स्थित सेलुलर जेल में वीर सावरकर को दी गई यातनाओं का स्केच 160 युवा महज 20 साल की आयु में हो गए थे बलिदानी

आइ.सी.एच.आर. ने पहली बार जलियांवाला बाग से लेकर आजादी के विभिन्न आंदोलन में 20 साल की आयु में बलिदान देने वालों का आंकड़ा तैयार किया है। इसके तहत पूरे देश में बलिदान देने वाले 160 युवा थे। हालांकि, इस संख्या को पूर्ण नहीं माना जा रहा है और इसके आधार पर कहा जाता है कि आने वाले दिनों में यह संख्या और बढ़ सकती है।

ब्रिटिश हुकूमत की पराधीनता से देश को आजादी दिलाने वाले दीवाने अध्यात्म और भारतीय संस्कृति से प्रेरित थे। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, बंकिम चंद्र चटर्जी, बाल गंगाधर तिलक, विनोबा भावे, लाला लाजपत राय जैसे प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों के लिए श्रीमद्भगवद्गीता मुख्य प्रेरणास्रोत थी, जिसके माध्यम से उन्होंने देशभर में स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी और एक दिन ऐसा आया कि अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। देश की आजादी में अध्यात्म और भारतीय संस्कृति की इसी भूमिका को गहन शोध के साथ तथ्यात्मक रूप से एक प्रदर्शनी में पेश किया गया है। भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (आइसीएचआर) द्वारा यह प्रदर्शनी अंबेडकर अंतरराष्ट्रीय केंद्र में लगाई गई।

प्रदर्शनी में प्रदर्शित चित्रों में गांधी के गीता के संबंध में कहे गए उन तथ्यों को पेश किया गया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि गीता सिर्फ मेरी बाइबिल या कुरान नहीं है, बल्कि यह मेरी शाश्वत मां है। वहीं, बंकिम चंद्र चटर्जी ने श्रीमद्भगवद्गीता नामक एक बंगाली टिप्पणी लिखी थी, जो उनकी पत्रिका प्रचार में 1886-1888 में प्रकाशित हुई थी। वहीं, विनोबा भावे, लाला लाजपत राय और लोकमान्य गंगाधर तिलक ने भी आंदोलन की गति को तेज करने के लिए अध्यात्म और भारतीय संस्कृति से प्रेरणा ली थी।

विभिन्न राज्यों के 12,865 लोगों ने दिया आजादी के लिए सर्वोच्च बलिदान

भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद ने 'डिक्शनरी आफ मार्टर्स : इंडियाज फ्रीडम स्ट्रगल' के आधार पर आजादी में बलिदान होने वालों का डाटा तैयार किया है। इसमें देश के विभिन्न राज्यों में बलिदान देने वालों का आंकड़ा जुटाया गया है। 'डिक्शनरी आफ मार्टर्सः इंडियाज फ्रीडम स्ट्रगल' के वैल्यूम-एक के पहले और दूसरे भाग के मुताबिक दिल्ली, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश में कुल 4,242 लोगों ने आजादी के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया।

वैल्यूम–दो के पहले और दूसरे भाग के मुताबिक उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, छत्तीसगढ़, जम्मू-कश्मीर और मध्य प्रदेश में कुल 3,948 लोगों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। वैल्यूम-तीन के मुताबिक महाराष्ट्र, गुजरात और सिंध में 1,380 लोगों ने बलिदान दिया। वैल्यूम-चार के अनुसार बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, असम, अरुणांचल प्रदेश, मणिपुर, मिजोरम, नागालैंड और त्रिपुरा में 2,116 लोगों ने अपना बलिदान दिया। वहीं, वैल्यूम-पांच के मुताबिक आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल के 1,179 लोगों ने देश की आजादी के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

प्रदर्शनी में दिखी वीर सावरकर को दी गई यातना की झलकी

प्रदर्शनी में दामोदरदास वीर सावरकर समेत अन्य क्रांतिकारियों को ब्रिटिश सरकार द्वारा सजा देने के बाद अंडमान के पोर्ट ब्लेयर स्थित सेलुलर जेल में दी गई यातनाओं को भी प्रदर्शित किया गया है। स्केच के जरिये दिखाया गया है कि किस तरह से हथकड़ी व बेड़ियों से बांधकर अमानवीय यातनाएं दी जाती थीं। साथ ही कैसे वह जेल के अंदर तेल की कोल्हू खींचते थे। यह भी दिखाया गया है कि पूरा तेल नहीं निकालने पर कैसे क्रांतिकारी आशुतोष लाहिड़ी के हाथ-पांव बांधकर उन्हें लाठियों से पीटा गया था। जेल में महावीर सिंह, मोहित मोइत्रा, मोहन किशोर नामदास, दीवान सिंह कालेपानी, फजल-ए-हक खैराबादी, योगेंद्र शुक्ला, बटुकेश्वर दत्त, शादन चंद्र चटर्जी, सोहन सिंह, हरे कृष्ण कोनार, शिव वर्मा, सुधांशु दास गुप्ता समेत कई अन्य क्रांतिकारियों को अमानवीय तरीके से प्रताड़ित किया गया था।

साभार-दैनिक जागरण
दिनांकः 31 मार्च, 2022

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com